International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 11, November 2022
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

संक्षिप्तिकरणः व्याकरण की दृष्टि से कालिदास के साहित्य का संधि प्रयोग

RAMESHWAR PRASAD RANAKOTI
RESEARCH SCHOLAR SUNRIESE UNIVERSITY ALWAR
DR. SWADESH YADAV
ASSISTANT PROFESSOR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR

सारांश

हमारे प्राचीन भारतीय इतिहास में कई ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने अपने शब्दों से कई रचनाएं की हैं आज इस लेख में हम जिस कवि के बारे में बात करने जा रहे हैं उन्होंने अपनी दूरदर्शी सोच और कल्याणकारी विचारों को अपनी रचनाओं में उतराकर साहित्य जगत में अपना अमूल्य योगदान दिया है। जी हां हम बात कर रहे हैं महान कवि कालिदास के बारे में भी एक कवि और नाटककार के साथ-साथ संस्कृत भाषा के प्रखंड विद्वान भी थे कालिदास में भारत के प्राचीन दर्शन और पौराणिक कथाओं को आधार बनाकर रचनाएं लिखी।

भारत के प्रसिद्ध शेक्सपियर महाकवि कालिदास के जन्म के बारे में ठीक प्रकार से ज्ञात नहीं है यह भी ज्ञात नहीं है कि महाकवि कालिदास का जन्म स्थान कौन सा है? महाकवि कालिदास के जन्म स्थान के बारे में विभिन्न प्रकार के विद्वानों ने अपने अपने विभिन्न मत दिए हैं अधिक लगाव रहा है इसलिए बहुत से विद्वान महाकवि कालिदास का जन्म उज्जैन में हुआ था ऐसे मानते हैं। लंबे समय के बाद कई साहित्यकारों ने एकमत होकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है, कि कालिदास का जन्म भारत के राज्य उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के कविल्ठा गांव में हुआ था। किंतु प्रमाण के साथ उनके जन्म स्थान का दावा अभी तक नहीं किया गया।

महाकवि कालिदास वास्तव में अनपढ़ थे बचपन में उन्होंने किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त नहीं की। वे महा मुर्ख थे। एक प्रपंच के द्वारा महाकवि कालिदास का विवाह एक ज्ञानी स्त्री राजकुमारी विधोत्तमा से हुआ। विवाह के बाद राजकुमारी को पता चला कि कालिदास तो अनपढ़ और मूर्ख हैं तो उन्होंने उसे घर से निकाल दिया और का एक विद्वान बनकर यह घर वापस आना कालिदास को बहुत बुरा लगा और वे मां काली के मंदिर में उनकी भक्ति करने लगे। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर मां काली ने उन्हें विद्या का आशीर्वाद दिया और कालिदास का एक उच्च कोटि के विद्वान बने विद्वान बने।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

विद्वान बनकर वे अपने घर पर आकर अपनी पत्नी के साथ रहने लगे इस प्रकार उन्हें ज्ञान मां काली के आशीर्वाद के फलस्वरूप प्राप्त हुआ था। उस के बाद कालिदास की कई गुरु हुए और उनकी मित्रता में वृद्धि होती गई।

महाकवि कालिदास की रचनाएं: महाकवि कालिदास उच्च कोटि के विद्वान थे जिन्हें ज्ञान स्वयं काली मां द्वारा प्राप्त हुआ था उन्होंने कई महाकाव्य खंडकाव्य नाटक तथा रचनाएं की हैं जिनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं:-

महाकाव्य:
रघुवंशम : यह महाकाव्य रघुकुल के राजाओं की जीवन गाथा पर लिखा गया है, रघुकुल में कई महा प्रतापी राजा हुए उनमें से एक भगवान श्रीराम भी हैं।

कुमारसंभवम: - यह महाकाव्य मां पार्वती तथा भगवान शिव के जीवन संबंधी घटनाओं से संबंधित है इसमें मां पार्वती तथा भगवान शिव से संबंधित कई घटनाओं का वर्णन है, जैसे कि कार्तिकेय का जन्म आदि।

खंडकाव्य –
मेघदूत - मेघदूत मेघ से संबंधित घटनाओं से संबंधित है इसमें मेघ द्वारा यक्ष का संदेश उसकी प्रियतमा तक ले जाने की प्रार्थना का वर्णन मिलता है।

ऋतुसंहार - ऋतुसंहार में समस्त ऋतुओ का वर्णन है

नाटक

मालविकाग्निमित्रम् - मालविकाग्निमित्रम् शुंग वंश के शासक अग्नि मित्र के जीवन से संबंधित एक घटना है। इसमें अग्निमित्र मालविका नामक कन्या के चित्र से प्रेम करने लगता है। और मालविका एक नौकर की कन्या थी किंतु बाद में पता चलता है कि वह एक राजकुमारी थी मालविकाग्निमित्रम् कालिदास का पहला नाटक है।

अभिज्ञान शाकुंतलम् - अभिज्ञान शकुंतलम महाकवि कालिदास द्वारा लिखा गया है एक नाटक है जो महाराज दुष्यंत और ऋषि विश्वामित्र कथा मेनका की पुत्री शकुंतला की प्रेम कहानी विवाह विछोह और मिलन की घटनाएं हैं।

विक्रमोर्वशीयम् - कवि कालिदास के इस नाटक में स्वर्ग लोक की अप्सरा उर्वशी तथा पुरवा की प्रेम कहानी तथा इंद्र के श्राप का वर्णन मिलता है। इसके बाद में महाकवि कालिदास की अन्य रचनाएं हैं कुल मिलाकर उन्होंने लगभग 40 प्रकार की रचनाएं लिखी हैं।

अन्य रचनाएं : श्रुतबोधम्, शृंगार तिलकम्, शृंगार रसाशतम्, सेतुकाव्यम, पुष्पबाण विलासम्, श्यामा दंडकम्, ज्योतिर्विधाभरणम्

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास संस्कृत भाषा के एक महान विद्वान तथा प्रसिद्ध कवि थे। जिनका अधिकतम समय उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य के दरबार में बीता। संस्कृत साहित्य के इतिहास में कई सारे प्रतिभावान कवि और साहित्यकारों की झलक देखने को मिलती है इन सभी साहित्यकारों में कालिदास का स्थान सर्वोपरि है।

कालिदास की रचनाओं से भारतीय दर्शन व साहित्य की झलक साफ नजर आती है। अपनी कला और प्रतिभा के बल पर कालिदास राष्ट्र में राष्ट्रीय चेतना फैलाते हैं यही कारण है कि बहुत से रचनाकार उन्हें "राष्ट्रकवि की संज्ञा" देते हैं।

महाकवि कालिदास ने संस्कृत साहित्य को कई सारी बहुमूल्य कृतियां दी है। कालिदास भी चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में से थे। कालिदास द्वारा लिखे गए रचनाओं में महाकाव्य गीत और नाटक का उल्लेख देखने को मिलता है।

कालिदास द्वारा लिखे गए रचनाओं में अभिज्ञानशाकुंतलम् (जो कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है) जिसका अनुवाद सर्वप्रथम यूरोपीय भाषा में किया गया था।

कवि कालिदास की दूसरे सबसे श्रेष्ठ रचनाओं में मेघदूतम का नाम सर्वप्रथम आता है। अपनी इस रचना में कालिदास जी ने प्रकृति का सजीव चित्रण किया है यही कारण है कि यह उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती ह

कालिदास जी ने बहुत सी ऐसी रचनाएं की हैं जिसके कारण संस्कृत साहित्य में इनका नाम कभी ना मिटने वाले कलम से लिख दिया गया है। कालिदास के सबसे सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्र, रितु समहारा, रघु वंस, कुमारसंभवम् और मेघदूत है।

महाकवि कालिदास ने अपने काम को वीर महान पुरुषों के जीवन से संबंधित घटनाओं के माध्यम से एक अलग दिशा दी महाकवि कालिदास की मुख्यत: वीर पुरुषों के जीवन संबंधी घटनाओं पर आधारित हैं।

इसके साथ ही उन्होंने प्रकृति का अनुपम स्वयं दिल का वर्णन भी अपनी रचनाओं में इस प्रकार से किया है कि कोई भी उसे पढ़कर आत्मविभोर हो जाए महाकवि कालिदास ने प्रेम विषय प्रकृति चित्रण द्वारा आद्रित और अमूल रचनाओं ऐसे युग को प्रदान की है।

कवि कालिदास का कला पक्ष: महाकवि कालिदास को अपने काम पर विशेष सिद्ध प्राप्त हुई इस कारण उनको कवि कुलगुरू कविता कामायनी विलास भारत का शेक्सपियर महाकवि आदि उपलब्धियों से अलंकृत किया गया है।

महाकवि कालिदास मूलत: संस्कृत भाषा के कवि हैं। कवि कालिदास की भाषा से श्रंगार तथा प्रसाद गुण से ओतप्रोत हैं। कवि कालिदास ने अपनी भाषा में शब्द अलंकारों का प्रयोग किया है, जबकि उपमा अलंकार पर उन्हें विशेष सिद्ध प्राप्त है। महाकवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में अलंकार और प्रसाद गुणों से युक्त सहज सरल भाषा का प्रयोग इस प्रकार से किया है कि उनका काव्य जीवात्मा के समान लगता है कवि कालिदास ने श्रंगार रस का अद्भुत प्रयोग अपनी रचनाओं में करके प्रकृति का अनुपम चित्रण किया है। ऋतुओ की व्याख्या के साथ ही महाकवि कालिदास की रचनाओं में आदर्शवादी परंपरा तथा नैतिक मूल्यों का भी समावेश मिलता है।

कालिदास का साहित्य में स्थान: महाकवि कालिदास मूलता संस्कृत भाषा के कवि हैं। जिन्होंने कई नाटक खंडकाव्य महाकाव्य रचित किए हैं। इसलिए भारतीय साहित्यकारों के साथ विदेशी साहित्यकारों में भी उनका एक महत्वपूर्ण स्थान है। महाकवि कालिदास को विदेशी कवि शेक्सपियर की उपाधि से भी सम्मानित किया गया है।

भारतीय साहित्य के क्षेत्र में महाकवि कालिदास का नाम हमेशा आदर और सम्मान के साथ लिया जाएगा।

कालिदास जी का व्यक्तित्व

कालिदास ने अपनी दूरदर्शी सोच और कल्याणकारी विचारों को अपनी रचनाओं में उतारा। कालिदास एक महान कवि और नाटककार ही नहीं बल्कि वे संस्कृत भाषा के विद्वान भी थे। वे भारत के श्रेष्ठ कवियों में से एक थे। उन्होनें भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार मानकर सुंदर, सरल और अलंकार युक्त भाषा में अपनी रचनाएं की और अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत को एक नई दिशा देने की कोशिश की।
साहित्य अभी तक हुए महान कवियों में कालिदास जी अद्धितीय थे। उनके साहित्यिक ज्ञान का कोई वर्णन नहीं किया जा सकता।

कालिदास का उपमाएं बेमिसाल हैं और उनके ऋतु वर्णन अद्वितीय हैं। मानो कि संगीत कालिदास जी के साहित्य के मुख्य अंग है इसके साथ ही उन्होनें अपने साहित्य में रस का इस तरह सृजन किया है जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

श्रृंगार रस को उन्होनें अपनी कृतियों में इस तरह डाला है मानो कि पाठकों में भाव अपने आप जागृत हो जाएं। इसके साथ ही विलक्षण प्रतिभा से निखर महान कवि कालिदास जी के साहित्य की खास बात ये है कि उन्होनें साहित्यिक सौन्दर्य के साथ-साथ आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है।

माना जाता है कि कालीदास मां काली के परम उपासक थे। अर्थात कालिदास जी के नाम का अर्थ है 'काली की सेवा करने वाला'।

कालिदास अपनी कृतियों के माध्यम से हर किसी को अपनी तरफ आर्कषित कर लेते थे। एक बार जिसको उनकी रचनाओं की आदत लग जाती बस वो उनकी लिखी गईं कृतियों में ही लीन हो जाता था।

ठीक वैसे ही जैसे उनको कोई एक बार देख लेता था बस देखता ही रहता था क्योंकि वे अत्यंत मनमोहक थे इसके साथ ही वे राजा विकरनमादित्य के दरबार में 9 रत्नों में से एक थे।

कालिदास जी का आरंभिक जीवन –

कालिदास के जन्म के काल को लेकर विवाद:

साहित्य के विद्वान और महाकवि कालिदास का जन्म कब और कहां हुआ इसके बारे में अभी तक कुछ भी स्पष्ट नहीं हैं। लेकिन इनके जन्म को लेकर विद्वानों के अलग-अलग मत है। ऐसा माना जाता है कि 150 ईसा पूर्व 450 ईस्वी तक कालिदास रहे होंगे। जबकि एक रिसर्च के मुताबिक कालिदास गुपतकाल में जन्मे होंगे। चूंकि कालिदास ने, द्धितीय शुंग शासक अग्निमित्र को नायक बनाकर "मालविकाग्निमित्रम्" नाटक लिखा और अग्निमित्र ने 170 ईसापूर्व में शासन किया था जिससे कालीदास के जन्म का अनुमान लगाया जा सकता है।

छठीं सदी में बाणभट्ट ने अपनी रचना "हर्षचरितम्" में कालिदास का उल्लेख किया है तथा इसी काल के पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में कालिदास का जिक्र है आखिरकार वे इनके बाद के नहीं हो सकते। इस तरह कालिदास के प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईसवी के बीच के जन्मे माने जाते हैं।

कालीदास ने जन्म-स्थान के बारे में भी कुछ स्पष्ट नहीं:

महाकवि कालिदास के जन्म काल की तरह उनके जन्मस्थान के बारे में भी कुछ स्पष्ट नहीं कहा जा सकता। उन्होनें अपने खण्डकाव्य मेघदूत में <u>मधयापर </u>के देश <u>उजैग</u>क शहर का काफी वर्णन किया है इसलिए कई इतिहासकार मानते है महाकवि कालिदास उज्जैन के निवासी थे।

कालिदास के जन्मस्थान के बारे में भी साहित्यकारों के अलग-अलग मत हैं। कुछ साहित्यकारों की माने तो कालिदास का जन्म <u>उततकराख</u>ंड के रुद्रप्रयाग जिले के कविल्ठा गांव में हुआ था वहीं कविल्ठा गांव में भारत सरकार के द्धारा कालिदास की एक प्रतिमा भी स्थापित की गई है इसके साथ ही एक सभागार का निर्माण भी करवाया गया है।
इसके साथ ही आपको ये भी बता दें कि इस ऑडोटोरियमें में हर साल जून में तीन दिनों की एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन होता है जिसमें हिस्सा लेने देश के अलग-अलग हिस्सों से विद्धान आते हैं।
कालिदास की छवि अति सुंदर और मनमोहक थी वे हर किसी को अपनी तरफ आर्कषित कर लेते थे इसके साथ ही वे राजा विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्नों में से एक थे।

महान कवी कालिदास जी के बारे में ये भी कहा जाता है कि वे बचपन में अनपढ़ थे उन्हें चीजों की समझ नहीं थी। लेकिन बाद में वे साहित्य के विद्दान हो गए और उन्हें हिन्दी साहित्य के महान कवि का दर्जा मिला।

कालिदास का राजकुमारी विद्योत्मा से विवाह – महान कवि और दार्शनिक कालिदास की शादी संयोग से राजकुमारी विद्योत्मा से हुई। ऐसा कहा जाता है कि राजकुमारी विद्योत्मा ने प्रतिज्ञा की थी की जो भी उन्हे शास्त्रार्थ में हरा देगा, वे उसी के साथ शादी करेंगी जब विद्योत्मा ने शास्त्रार्थ में सभी विद्दानों को हरा दिया तो अपमान से दुखी और इसका बदला लेने के लिए छल से कुछ विद्धानों ने कालिदास से राजकुमारी विद्योत्मा का शास्त्रार्थ करवाया और उनका विवाह राजकुमारी विद्योत्मा से करवा दिया। आपको बता दें कि शास्त्रार्थ का परीक्षण के लिए राजकुमारी विद्योत्मा मौन शब्दावली में गूढ़ प्रश्न पूछती थी, जिसे कालिदास अपनी बुद्धि से मौन संकेतों से ही जवाब दे देते थे।

विद्योत्मा को लगता था कि कालिदास गूढ़ प्रश्न का गूढ़ जवाब दे रहे हैं। उदाहरण के लिए विद्योत्मा ने प्रश्न के रूप में खुला हाथ दिखाया तो कालिदास को लगा कि वह थप्पड़ मारने की धमकी दे रही हैं।

इसलिए उसके जवाब में उन्होनें घूंसा दिखा दिया तब विद्योत्मा को लगा कि कालिदास कह रहे हैं कि पांचों इन्द्रियां भले ही अलग हों, सभी एक ही मन के द्धारा संचालित है। इससे प्रभावित होकर राजकुमारी विद्योत्मा ने कालिदास से शादी करने के लिए हामी भर दी और उन्हें अपने पति के रूप में स्वीकार कर लिया।

विद्योत्मा की धित्कार के बाद कालिदास बने महान कवि:

कुछ दिनों बाद जब राजकुमारी विद्योत्मा को जब कालिदास की मंद बुद्धि का पता चला तो वे अत्यंत दुखी हुईं और कालिदास जी को धित्कारा और यह कह कर घर से निकाल दिया कि सच्चे पंडित बने बिना घर वापस नहीं आना। फिर क्या था पत्नी से अपमानित हुए कालिदास ने विद्या प्राप्त करने का संकल्प लिया और सच्चे पंडित बनने की ठानी और इस संकल्प के साथ वे घर से निकल पड़े। और मां काली की सच्चे मन से उपासना करने लगे। जिसके बाद मां काली के आशीर्वाद से वे परम ज्ञानी और साहित्य के विद्धान बन गए। इसके बाद वे अपने घर लौटे, और अपनी पत्नी को आवाज दी, जिसके बाद विद्योत्मा दरवाजे पर सुनकर ही समझ गईं कि कोई विद्धान व्यक्ति आया है।

इस तरह उन्हें अपनी पत्नी के धित्कारने के बाद परम ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे महान कवि बन गए। आज उनकी गणना दुनिया के सर्वश्रेष्ठ कवियों में की जाने लगी यही नहीं संस्कृति साहित्य में अभी तक कालिदास जैसा कोई दूसरा कवि पैदा ही नहीं हुआ।

महाकवि कालिदास की गणना भारत के ही नहीं बल्कि संसार के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों में की जाती है। उन्होंने नाट्य, महाकाव्य और गीतिकाव्य के क्षेत्र में अपनी अदभुत रचनाशक्ति का प्रदर्शन कर अपनी एक अलग ही पहचान बनाई।

उपयुक्तग्रन्थसूची

1. मालविकाग्निमितरनम् कालिदास द्वारा रचित संस्कृत नाटक
2. विकरिमोरवनशीयम् - पण्डित सुरेन्द्रनाथ शास्त्री विरचित
3. अभिजा।Aनशाकुनत्लम् डा कु. शुचिता राय
4. ऋतुसंहारम् - कालिदास द्वारा रचित
5. मेघदूतम् - कालिदास द्वारा रचित
6. कुमारसम्भवम् - कालिदास द्वारा रचित

7. रघुवंशम् - कालिदास द्वारा रचित

8. स्तोत्राणि - कालिदास द्वारा रचित

9. संस्कृतव्याकरणस्य परम्परा- https://mycoaching.in/sanskrit

10. पाणिनिपूर्वं व्याकरणम्- डा ऊमा शंकर शर्मा

11. सन्धिप्रकरणम्- https://rbsereet.com/sanskrit-vyakaran-sandhi-pdf/

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**